नं० ६५८-घ

(हिंदी प्राप्तम्) भगवद्गीतासारः (भक्तिशास्त्रम्)

नं० ६५८-घ

पत्राणि 14 (सम्पूर्णम्)

नं० ६५८ – घ

(हिन्दीमें) भाषागीतासारः (भवितशास्त्रम्)

पत्राणि १४ (सम्पूर्णम्)

सं. २५६८६
[illegible]
१४ पत्राणि
[illegible]
[illegible]

मा

गी॰
१

ॐश्रीगणेशायनमः ॐअथगीतामहा
रलिख्यते अर्जुनश्रीकृष्णभगवान
पहिप्रश्नकरैहैहेपरमेश्वरजीॐका
रकेमहातम्यअरुसरूपअरु अस्था
नतिसकेसुनणेकोमेरीबांछनाहैतु
मक्रिपाकैरनिरूपनकरो श्रीभग
वानुवाच हेअर्जुनॐकारकोविस्था

एकरिकहताहोतुमस्रवनकरो चि
हगीनामारहेब्रह्माविस्नुमहेसपिस
केरष्याकरनहारेहै अगनअरुवा
यिअरुसूर्जतिसकेदेवताहै गाय
त्रीजगत्रीअरुत्रिष्टपायिहतीनोछं
दहै अगनअस्थानहैतहांतीनोवे
दहै रिगवेदजुजुरवेदसामवेद

२

सामवेदतीनोवरनोकीवरनअरउतप
तिकहैंहैंॐकारतेयिनकौंउतपति
है रिगवेदकानीबरनहै जजुरवे
दकापीतबरनहै स्यामवेदकास्वेत
वरनहै अकारनासम्यबरम्हहै
अरुमकारकेलोऊहै ओरमकार
परमस्वरूपहै हिर्दैकमलविषेबस

गी॰
७

है प्रिथमी अगनि रिगवेद ब्रह्मा इह
चारो अकार अक्षर के साथि है जजुर्वेद
सनातन विस्नु इह दोनो ऊँकार अक्षर
साथ हैं वन हैं नमोगुणने उतिपति है
है अर्द्ध न अकार ऊँकार मकार यिह ती
नो अक्षरो कर ऊँकार होता है सो जोती
सरूप है और तीनो यिस के अस्थान है

तीनोयिसकीमात्राहै अरुतीनोयि
3 सकेसरूपहै अकारउंकारहै ऐसी
मारिगीनाहै जोऐसाउंकारमकार
९ लोनजाणेसोब्रह्मनाही अविउंका
रकीमहिमाकहोहूं उंकारहीतेवे
ती. दउपजे उंकारहीतेदेवताउपजे उं
रु कारब्रह्मजगकरिसजै अबजगकी
ही

समम्योकहोहो धीरजुकीअगनमनका
र्थमनगासंतोषदीसमायरइंद्रियाकेअर्थेहो
मे होमममम्योआत्माजगकाकर्ताहैअग्र
मथनन्नलेकीलकजीआत्माहै उपरिकी
लकजीऊंकारहैध्यानकीरमर्थे मध्येहे
व्रह्मअगनमगठेहै जेअगनिध्योजीहो
इ नजेपापोंकानासुकरे जोअगग्निव

कुतीहोउतउसुक्किकवै हीनप्रकारका
जो ओंकारहैजिसकोहजेजोभजे नेव
कीलंबीस्त्वमधागतेसी ओंकारकोधा
गी ५ गहै ह्येहेकीन्याईसवहोताहै ऐसेअ
विनासी ओंकारकोजाणे सोब्रह्मकावे
दहै आगेप्रवतअराधनकोबिधिकहो
के हरकेविषेब्रह्माकाध्यानकरे ॐ

भकविब्वेविलिकाध्यानकरे रेचकावि
षेमहेस्तुरकाध्यानकरे मोकैसामहे
स्तुजोमाधानिपरेहे अषरअमात्रासेभि
बिदुकेआसेहे सोऊँकारकेनादक
विबिंदकोबाधे ऊँकारकीधुनिमाहि
वाउसंचारकारिनारीकेबीचकारेच
लावै जिह्वकेअग्रकरसेवाकरे

5

गो॰ ५

सोवाउअलनहोइ नउजोगीजोगकी
गतिकोपावै नामकाकेबीचकरिबा
वकर्कसंचारकरि तिसकीनिरालेव
बिंदुहै ऊपरअरनलेकीवाउकोर
छ्याकरै वकुरतिसतेब्रह्मकवलपावै
सोकेसाहैसरियमेनउहैपरैतेपरे
है तहांसवअनाहदहोताहै ति

सुविषेयुनुहै यानुषिषैजोनुहै जो
नविषेमनुहै नहामनो विलीनहोता
है सोतिसकापर्मपदुहै तिसपदवि
षेपुनहै तिसपुंनकोब्रह्मकहैहै ति
सुब्रह्मकेपायेतेपरमानंदकोप्रापति
होताहै तिसपरमानंदकेसमुद्रको
पायिकेप्ररकतुंमकरैचलकलरि

रिदे विषिपरमहंसपरमात्माभगवान
औतिसकोनमस्कारकीजो सोपरमा
त्माकैसाहै आदिअंनतेरहतहै नि
र्दोषहैत्रिजुगनतेमुक्तिपावैसाजो
भैसाभगवानकास्नरूपज्ञागो सो
गी० पापपुननतेनिर्लेपहै अविहंनको
६ महिमाकहौहो सन्तोतेउनप

तिहै सुतिहीपरमपदहै तिसमहु
नविषेपुनहै तिसुपुनकीब्रह्मकह
तेहै नाबकेवलाविषकेवलहै द
सिअंगुलातिसकेवलकीनालहै मो
ऊरधमुषकेवलेहै तिसकेवलका
वरनकेलेकेफलजैसाहै अरुचंद्रमा
कोजैसा ... उसकोजोनहेअरुव

उहैदलजिसके अतिसुंदरबिनिसु बि
षेंबसतेहैं ननुआनंदचर्मेअस्थान
है अर्जुनोवाचहेश्रीकृस्नजीफिर
दैविषेजोऊर्धसुषकवलहैसोत
पावनभीकठनअरुजानभीकठन
है हेजनार्दनजोयिसकवलके
पावणोंकीजुगतिहैसोमेरेविषेनि

गी
८

त्पनकरो श्रीभगवानुवाच हेअर्जुन
ऊर्धमुषिकवलजोहिर्देविषेहै तिसको
ऊंकारकीअराधनाकरिमेध्याकरो ति
सकवलकेगर्भविषेजाषिमाप्रतिहो
उ तउपापोकानासहोउ सारेसरीर
विषेपर्मसुषऊपजे तिसकोजेजेकंच
नजैसीहै तिसुजेजेविषेहसनपुरन

वसतेहैअंगुष्ठमात्रमनुवहीताहै ति
सकमलकेअष्टपत्रहै पत्रहविषेब्र
ह्मइंद्रादिकदेवताहै सोदेवताजो
तीसरूपहै तिसकवलकोउंजीमहि
लाजहै लाउंपरेचंद्रमाहै चंद्रमेप
रिअगनिहै अगनमहिजामहै जोत
मैमिचामनेहैनानापकारोंकेरतनोक

गी॰

८

तिषैवतुहै सर्जकाजैसाप्रगणसुहै औ
रैसिंघासनमहि देवाधिदेवपतिनारा
यिणहै सोनारायिणकैसाहैनिर्दोष
है सुषनिधानअरुनारायिणकोरूप
वरनकहताहौं अतिसुंदरअरुमु
जापरफुलनकवलकौन्यारूहै अरुहौ
कलकवलोपिवैअरुषअरुहोओविघ्नै

गौ
८

हंषचक्रगदापद्मयनघबानमृतलअं
कस्तु सोकेसाहे हरिकंचनकेकव
लकीन्याघीहे तेमाहरिकाप्रकाश
हे स्फधफटकुकीन्याईसुयहे कोटि
चंद्रमाकोजोसीभ्रूनथरीहे ऊनको
टसूर्जकाजेसाप्रगासहे कोटिचंद्र
माकोजेसोसीनलाईहे मुजाविबे

बकुटेहैं चरणकवलविबेन्नूपरहैं
कंठविषेकुद्रघंठकाहैंमकराक्रितकुं
डलहैं चारोजुगवरनयरेहै सत्य
जुगसुकलत्रेतारकतद्वापरपीत क
लजुगनीलहै चारोवर्णहैं ब्रा
ह्मणवैपारूद्र समनाहिनिरंकार
है अपरमेऊहैविभिजाताहैं आतिने

रमलहै जोतीसरूपहै वकुवकैसाहै जो
गअकविषपानकाकरताहै किसेवस्त
कीसाधनानहीकरता ताडुअकावें
डुकीकलातेरहतहै जोअैसेपुरषो
१११ जों तमकीजोगोसोवेदकावेताकहोअै
९ अर्जुनउवाचहेश्रीक्रिस्नजोअदिरि
विषेभावनानोसोउपजनी असेंदष

मानविनसजानाहै अधरजोहैब्रह्मसो वचनविहनतेरहतहैसभजोजोगासुव ध्यानुकिसकाकरनेहै श्रीभगवानु वाच हेअर्जुनजोगोमेरोंकोमानेसु णिजोउनकीकेसासुधिहै उनआदि अंतमाधिसभकोजाननाहै जोयिस मंत्रकोउचारकरेसोमुकतहोर हेअ

॥ र्जनविहप्रडे सोतोमम नोकरज्ञोविषेजो
गज्जुगतिहोवे अनमावगीताकेमाहा
कीश्रीभगवानुच ॥ कीमहीमाकहे
गी· हैअर्जुनविहगीतासारहे ग्रंथकार
११ कानामकरतीहै दर्पनकीन्याईदर्षान
दिखावेहै हे अर्जुनायमगीतासारम
हिब्रह्मग्यानहै वेदोअरु शास्त्रोंकाने

हवाहै. अरुणुहामेवेदोकाअर्थेसग
करतातेहैंउत्तरपदहै पापोंकानासुकर
नीहैननितियहै जोकोईश्रेसीसारगी
ताकेअर्थजलविषेयेसावककरेपाहकरे
सोअसपदकोपावे ओंनमोगपजेलिषेगा
वै सारेसंसारकेमरमाकोनासकरिके
परमपदकोपावे अष्टादसभुवाला चा

रोवेट नवख्याकरणि येमभेख्यास
ओमथे मथिकोमहाभावनतिक
स्या सोमहाभारथमथिंकोसातमे
सातमलोऊभगवतगींकाठी ति लो
गों हुभागवतकोमथिकविष्णोक्रिसम
१२ सारगीताकाठो तिस सारगीताका
अर्जुनेकासबारविदुविषैहोमको

या पापोंकानासुकरतीहै दिनदि
नषिसकापावकौंजौ स्रवनकौंजे गं
गाजीकेषिस्नानकापुनंहै जोको
ईऐसीसारगीताकेअर्थजलविषै
पातुकवैसोहसारतेमुक्तहोइ तैसे
श्रीसतिसरूपहै जसकौंदोतीहै

13 बलकीदातीहै आयिबबलाकी
दातीहै नारायिणमयीदेमगलसा
मत्रमयीगीतासर्वपरमसुंदया
जैकिईयिसकायेकसलाकआ
गी थासलोकु येकवरणआयाचरण
१२ ऊवारकेदेपातुकरेध्यानुकरेसोसं

सारकेअर्थयह्रूपनेमुनिकाहिई स्त्री
कलभगावनजीकेवचनहै वचनो
हीनेगीतासारहै अमृतरूपहैहरी
तकोन्याईपापोकोवरेचनकरनेहारी
है रेमानुषकनुमणिसकोकिउत्त
होमातेबारबारगीताकापाठश्रवन
कीजै स्मरणाहरूकाठिस्यारहकि

14

नतिमित कीजै नाम कमल जा है
श्रीकृष्ण भगवान जी तिस के कमल ते
निकसे हैं जो को इंगीता का पाउ करे
सो विष्णु के रिधमान ज्ञाथिमा पति हो
गी॰ २४ इ. धिसनै बहु कृपा कहो इति श्रीकृ
ष्णा[illegible]र्जुन संवादे सार गीता संपूरण समाप्तं
॥ ॥ ॥ पतार्ग